SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

चित्रकला : सामान्य परिचय एवं महत्व

डॉ. प्रकाश कुमार अग्रवाल, प्रध्यापक, हिन्दी विभाग,
खड़गपुर कॉलेज, जिला पश्चिम मदिनीपुर, पश्चिम बंगाल, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author :
डॉ. प्रकाश कुमार अग्रवाल,
प्रध्यापक, हिन्दी विभाग,
खड़गपुर कॉलेज, जिला पश्चिम मदिनीपुर,
पश्चिम बंगाल, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 23/10/2019
Revised on : -----
Accepted on : 26/10/2019
Plagiarism : 02% on 23/10/2019

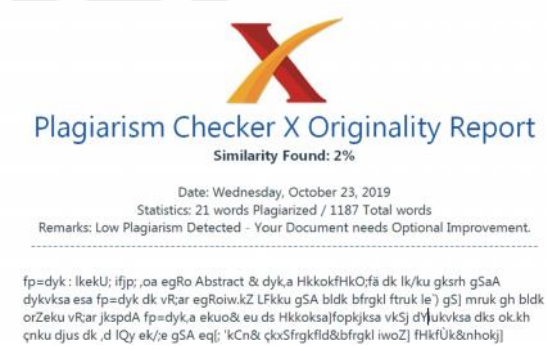
Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 2%

Date: Wednesday, October 23, 2019
Statistics: 21 words Plagiarized / 1187 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

fp=dyk : lkekU; ifjp; ,oa egRo Abstract & dyk,a HkkokfHkO;fä dk lk/ku gksrh gSaA dykvksa esa fp=dyk dk vR;ar egRoiw.kZ LFkku gSA bldk bfrgkl ftruk le`) gS] mruk gh bldk orZeku vR;ar jkspdA fp=dyk,a ekuo& eu ds Hkkkoksa]fopkjksa vkSj dY;ukvksa dks ok.kh çnku djus dk ,d lQy ek/;e gSA eq[; 'kCn& çkx'Sfrgkfld&bfrgkl iwoZ] fHkfÙk&nhokj]

Abstract :-

कलाएं भावाभिव्यक्ति का साधन होती हैं। कलाओं में चित्रकला का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। इसका इतिहास जितना समृद्ध है, उतना ही इसका वर्तमान अत्यंत रोचक। चित्रकलाएं मानव– मन के भावों, विचारों और कल्पनाओं को वाणी प्रदान करने का एक सफल माध्यम है।

मुख्य शब्द :–

प्रागैतिहासिक–इतिहास पूर्व, भित्ति–दीवार, गुहा–गुफा, यथार्थ– वास्तव ।

प्रस्तावना :–

कला मनुष्य की भावाभिव्यक्ति का प्रधान साधन है। कला के लिए अंग्रेजी में आर्ट शब्द का प्रयोग किया जाता है किंतु इसका एक सुनिश्चित अर्थ अब तक नहीं मिल पाया है। गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर ने कला की परिभाषा देते हुए कहा है – ''कला में मनुष्य अपने भाव की अभिव्यक्ति करता है।'' अर्थात मनुष्य विभिन्न कलाओं के माध्यम से अपनी भावनाओं और विचारों को दूसरों तक संप्रेषित करता है। हिंदी साहित्य में आदि काल से लेकर आधुनिक काल तक विभिन्न कलाकारों ने अपनी कलाओं के माध्यम से न केवल हिंदी साहित्य को समृद्ध किया है बल्कि मानव मन की संवेदनाएं और भावनाओं को दर्शाने का सफल प्रयास किया है। ''कला विभिन्न शैलियों तथा प्रवृत्तियों के संदर्भ में समकालीनता और आधुनिकता समानार्थी पद है । समकालीनता अथवा आधुनिकता की अवधारणा न तो भौगोलिक है ,न इसका अर्थ मशीनीकरण है, न यह फैशन है , यह भौतिकवाद भी नहीं है और न ही यह सामाजिक पुनर्निर्माण का सिद्धांत है । वर्तमान में जिन चीजों का अस्तित्व है, यह तो उसे पूरी तरह

सीमाबद्ध नहीं कर पाती।" कलाकार अपनी सृजनात्मक ऊर्जा और जागृत चेतना के माध्यम से कला की यथार्थ परिकल्पना करता है ।

कलाओं की संख्या 64 मानी जाती है। वात्स्यायन ने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ कामसूत्र में इन 64 कलाओं का उल्लेख किया है। इन कलाओं में सर्वश्रेश्ठ कला चित्रकला है । यह भारत की अत्यंत प्राचीन ललित कला है। भारतीय चित्रकला को मूल रूप में हम चार भागों में बांट सकते हैं –

1. चित्रपट
2. चित्रफलक
3. भित्ति चित्र
4. लघु चित्र

चित्रपट अर्थात वह कपड़ा, कागज या पटरी जिस पर चित्र बनाया जाए या बना हो। चित्र फलक हाथीदांत, पत्थर, काठ, कागज आदि का तख्ता जिस पर चित्र बनाया जाता है।

भित्ति चित्र सबसे पुरानी चित्रकला है। प्रागैतिहासिक युग में मिट्टी के बर्तनों मैं यह चित्र बनाए जाते थे। बाद में लोगों ने दीवारों पर चित्र बनाने के लिए मिट्टी का प्रयोग शुरु कर दिया। अजंता, बाघ आदि की गुफाओं में इसके उदाहरण देखे जा सकते हैं ।

लघु चित्र का विस्तृत वर्णन हम ''समरांगण सूत्रधार'' नामक वास्तु शास्त्र में देख सकते हैं इसमें प्राकृतिक रंगों का उपयोग किया जाता है। ये पुस्तकों के पष्ठों पर तथा वस्त्रों के टुकड़ों आदि पर बनाए जाते हैं। इन्हें ''मिनिएचर पेंटिंग'' भी कहते हैं। बंगाल के पाल शासकों को लघु चित्रकारी की शुरुआत का श्रेय दिया जाता है।

चित्रकला भावाभिव्यक्ति का एक सफल साधन है। बहुत पहले जब भाषा और लिपि चिह्न नहीं थे, तब मनुष्य इन्हीं चित्र कलाओं के माध्यम से अपने मन की भावनाओं और तत्कालीन मुख्य घटनाओं को व्यक्त करता था। सभ्यता के विकास के साथ– साथ इस कला के स्वरूप का भी उत्तरोत्तर विकास होता गया। कभी ये धार्मिक अभिव्यक्ति के लिए प्रयुक्त की जाती थी, तो कभी प्रेमाभिव्यक्ति के रूप में। कभी ये उस समय की सभ्यता तथा संस्कृति का बोध कराती है, तो कभी उस काल विशेष की घटनाओं का दृश्य उपस्थित करती है । इसका फलक अत्यंत विस्तृत है ।

भारत में यह कला अत्यंत प्राचीनतम है। प्रागैतिहासिक काल से ही मनुष्यों में चित्रकला के प्रति विशेष आकर्षण देखने को मिलता है । गुहाजीवन जीवन व्यतीत करते हुए गुहाओं में इन मानवों द्वारा बनाए गए चित्र इनके चित्रकला संबंधी प्रेम को प्रकट करने में सक्षम हैं। उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर जिले में तथा मध्यप्रदेश के शिवपुर होशंगाबाद आदि अनेक स्थानों पर चित्रकला के सुंदर नमूने देखने को मिलते हैं। वर्तमान समय में इसे दो भागों में बांटा जा सकता है– फाइन आर्ट और कमर्शियल आर्ट। फाइन आर्ट में जहां अभिव्यक्ति की प्रधानता है, वहीं कमर्शियल में अलंकरण की। अगर हम भारतीय चित्रकला – शैली के उदाहरणों की बात करें, तो सबसे पहले अजंता की गुफाओं का नाम आता है। इन गुफाओं का निर्माण गुप्त काल में हुआ था। अजंता की गुफाएं महाराष्ट्र में स्थित हैं। ये बौद्ध स्मारक गुफाएं हैं, जो द्वितीय शताब्दी ई. पूर्व की है। इसमें बौद्ध धर्म से संबंधित जानकारियां प्राप्त होती है। अजंता गुफाएं सन 1983 से यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल घोषित हैं।

एलोरा या एल्लोरा चित्रकला का एक सुंदर उदाहरण है। यह एक पुरातात्विक स्थल है। यह महाराष्ट्र के औरंगाबाद में स्थित है। यहां 34 गुफाएं हैं। इन गुफाओं में बौद्ध, जैन तथा हिंदू धर्म की रोचक जानकारियाँ हमें प्राप्त होती हैं। यह गुफाएं राष्ट्रकूट वंश के शासकों द्वारा बनवाई गई थीं।

बाघ गुफाएं बौद्ध धर्म से संबंधित हैं। ये गुफाएं मध्यप्रदेश में धार जिले से 97 किलोमीटर दूर विन्ध्य पर्वत के दक्षिणी ढलान पर हैं। यहां अनेक बौद्ध मंदिर एवं मठ देखे जा सकते हैं। ऐसा माना जाता है कि यहां बौद्ध भिक्षु का निवास स्थान था। यह गुफाएं अत्यंत प्राचीन एवं रहस्य से भरी हुई हैं । ऐसा माना जाता है कि बौद्धों के पतन के उपरांत इन गुफाओं में बाघों का निवास हो गया । यही कारण है कि इन गुफाओं को बाघ गुफाओं के नाम से जाना जाता है। यहां के आसपास के गांव को बाघ गांव तथा यहां से बहने वाली नदी को बाघ नदी कहा जाता है।

एलिफेंटा की गुफाएं भी चित्रकला का एक अनुपम उदाहरण हैं। ये गुफाएं महाराष्ट्र के मुंबई शहर से 10 – 11 किलोमीटर की दूरी पर स्थित हैं। पौराणिक देवी–देवताओं की मूर्तियों के लिए ये अत्यंत प्रसिद्ध हैं। ये गुफा मंदिर राष्ट्रोंकूटों के समय बने माने गए हैं। एलिफेंटा में भगवान शंकर के कई रूपों की मूर्तिकारी अजंता– एलोरा की मूर्तिकारी के समान दिखाई पड़ती है।

जैन चित्रकला सातवीं से बारहवीं शताब्दी तक की एक महत्वपूर्ण चित्रकला है। जैन चित्रकलाओं मंक पार्श्वनाथ, महावीर स्वामी, नेमिनाथ आदि के चित्र सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं।

पाल चित्रकला भी बौद्ध धर्म से प्रभावित है। 9वीं से 12वीं षताब्दी तक बंगाल में पाल वंश के शासन काल में ये चित्रकला विकसित हुई। धर्मपाल, देवपाल आदि शासकों ने इस कला का विकास किया ।

अपभ्रंश चित्रकला पश्चिम भारत में विकसित एक महत्वपूर्ण चित्रकला है । इसका समय 11वीं शताब्दी से 15वीं शताब्दी के बीच माना जाता है।

15 वीं शताब्दी से 17 वीं शताब्दी तक का समय मुगल चित्रकला का समय था । मुगलों का चित्रकला के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान रहा है। इनकी चित्रकारी में ईरानी और फारसी प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। जहांगीर स्वयं अच्छे चित्रकार थे।

राजपूत चित्रकला भी चित्रकला के क्षेत्र में अपना विशिष्ट स्थान रखती है। इस चित्रकला का क्षेत्र राजस्थान है। आनंद कुमार स्वामी की पुस्तक ''राजपूत पेंटिंग'' में इस चित्रकला का विस्तृत विवेचन प्राप्त होता है।

इनके अलावा भी चित्रकला की अनेक शैलियां हैं, जिसने भारतीय चित्रकला के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

निष्कर्ष :–

निष्कर्षतः हम यह कह सकते हैं कि चित्रकला अत्यंत ही प्राचीन और महत्वपूर्ण कला है । इसका इतिहास जितना पुराना है, उतना ही इसका स्वरूप अत्यंत विकसित और प्रभावशाली है। ये चित्रकलाएं मानव की संवेदनाओं को उभारने में पूरी तरह सक्षम हैं। व्यक्तियों के मन को उदात्त बनाने में इन चित्रकलाओं का महत्व है। प्रागैतिहासिक कला से आज तक की चित्रकलाओं में मानव के भावों और विचारों की एक सुदृढ़ परंपरा दिखाई देती है।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. https://namami.gov.in
2. http://shodhganga.inflibnet.ac.in
3. https://www.niti.gov.in

****